RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
ब्रह्मज्ञान ही अमृत है।
सरसावा

तारतम मंजरी

वर्ष ५ अंक ५ मई २०२० बुद्धजी शाका ३४२ विक्रम सवंत २०७७ पृष्ठ संख्या ३२

ब्रह्मज्ञान ही अमृत है

प्रेम ही जीवन है

आध्यात्मिक उन्नति के आठ सूत्र

१. नियमित ध्यान
२. नियमित स्वाध्याय
३. सात्विक अल्पाहार
४. प्रबल पुरुषार्थ
५. परब्रह्म के प्रति समर्पण एवं गुरुजनों के कथनों के प्रति श्रद्धा
६. शिष्टाचार
७. दृढ़ संकल्प
८. अटूट आत्मविश्वास

स्वत्वाधिकारी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड रोड, सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

Email : shriprannathgyanpeeth@ gmail.com Youtube: SPJIN Website: www. spjin.org

Twitter : @Raajan Swami Whats App: +917533876060

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय : चित्र की नहीं, चरित्र की पूजा करें		1
2.	बीतक समीक्षा – 9 : ज्ञान का अहंकार नहीं करना चाहिए	कृष्ण कुमार कालड़ा	3
3.	दुःखों से छूटने का उपाय	आचार्य सुभाष	8
4.	इश्क बिना न पाइए नूरतजल्ला हक	ज्योती निजानन्दी	13
5.	देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आखां खोल	राजदीपक	17
6.	कालमाया का ब्रह्मांड और प्रलय	शशि किरन	21
7.	धर्म और अध्यात्म	डाली गिरधर	24
8.	हाँसी और हम	राहुल श्रीमाली	26
9.	कोरोना की दवाई आपके शरीर मे ही है	–	28

ज्ञानपीठ के उद्देश्य

ज्ञान, शिक्षा, उच्च आदर्श, पावन चरित्र व भारतीय संस्कृति का समाज में प्रचार करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा मानव को महामानव बनाना एवं श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी द्वारा समाज में फैल रही अंध परम्पराओं को समाप्त कर सबको एक अक्षरातीत की पहचान कराना।

सदस्यता शुल्क

भारत में	विदेश में
वार्षिक 130 रू.	650 रू.
आजीवन 1200 रू.	.....

लेख में प्रगट किये गये विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इनके प्रति सम्पादक, प्रकाशक उत्तरदायी नहीं है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र सहारनपुर होगा।

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232 | सम्पर्क सूत्र – 9725389547, 7088120381
ई मेल : tartammanjari@gmail.com

Youtube:SPJIN
वेबसाईट :– www.spjin.org
ई मेल :– shriprannathgyanpeeth@gmail.co

सम्पादकीय

चित्र की नहीं, चरित्र की पूजा करें

– राजन स्वामी

चित्र पूजा, मूर्ति/जड़ पूजा का ही प्रतिरूप है। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि हम स्वयं इंसान की बनाई हुई पत्थर, मिट्टी व लकड़ी की बनाई हुई मूर्ति को तो छप्पन भोग लगाते हैं परन्तु एक भूखे भिखारी के रूप में घर आई परमात्मा की बनाई मूर्ति को दुत्कार कर भगा देते हैं।

महापुरुषों का सम्मान करना तो उचित है परन्तु उनके चित्रों की आरती–पूजा करना किसी भी दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता। उल्लेखनीय है कि वर्तमान काल के महापुरुषों को छोड़कर प्राचीन काल के समस्त महापुरुषों के चित्र काल्पनिक हैं। यहां तक कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण तथा अन्य पौराणिक देवी–देवताओं के चित्र भी कलाकार की कल्पना के आधार पर बनाये जाते हैं।

महापुरुषों के प्रति सम्मान प्रकट करने का सबसे सुंदर तरीका है –– उनके चरित्र की पूजा करना अर्थात उनके सद्गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करना। यदि हम ऐसा करते हैं तो यह उनके प्रति हमारी सही मायनों में श्रद्धांजलि होगी।

लेकिन आज सर्वत्र उल्टी गंगा बह रही है। आज महापुरुषों के गुणों का अनुशीलन करने के लिए कोई भी तैयार नहीं दिखता –– बस उनके चित्रों को धूप–अगरबत्ती लगा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं।

यह सत्य है कि सृष्टि के कण–कण की तरह मूर्ति में भी परमात्मा की सत्ता विद्यमान है किंतु उसका सृजन तो इंसान ही करता है। यही नहीं, पूजा करने के पश्चात जहां चित्रों को किसी मंदिर के बाहर फेंक दिया जाता है वहीं मूर्तियों को नदियों में प्रवाहित कर देते हैं –– यहां तक कि नालों में

फेंकने से भी नहीं झिझकते। यह कैसी भक्ति है? ऐसे कर्मकांड से क्या परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है, यह विचारणीय है।

यदि हमें विधा चाहिए तो उचित होगा कि हम मां सरस्वती के चित्र की पूजा करने के स्थान पर आलस्य–प्रमाद का परित्याग कर ब्रह्मचर्य, तपस्चर्या एवं नियमित स्वाध्याय जैसे गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करें। इसी प्रकार, धन–एश्वर्य के लिए लक्ष्मी जी के चित्र की आराधना करने के स्थान पर ईमानदारी के साथ कठोर परिश्रम करें।

हमारे समाज में भी यह विकृति धीरे–धीरे पांव पसार रही है। सदगुरु धनी श्री देवचन्द्रजी व महामति श्री प्राणनाथ जी के जो चित्र प्रचलन में हैं वे पूर्णतः काल्पनिक हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे तत्कालीन जामनगर राज्य के परिवार के सदस्यों के हैं। इनमें भी समय–समय पर मिथ्या सोच के आधार पर परिवर्तन कर दिया जाता है। अब तो इनकी मूर्तियां भी बनने लगी हैं। इसी प्रकार, जो युगल स्वरुप श्री राज श्यामा जी का चित्र प्रचलन में है, जिसे सुंदर साथ आरती–भोग भी करते हैं, वस्तुतः उन कलाकारों के चित्र हैं जिन्होंने श्री प्राणनाथ जी टीवी सीरियल में अभिनय किया था। है न हास्यास्पद!

अतः हमें जड़ वस्तुओं की पूजा के स्थान पर अपने हृदय मंदिर में ही अपनी आत्मा के प्रियतम को ढूंढना होगा और यह केवल तारतम वाणी के प्रकाश में प्रेममयी चितवनि द्वारा ही संभव हो सकता है।

प्रणाम जी।

प्रस्तुति

कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

बीतक समीक्षा - ६

प्रस्तुति एवं प्रलेखन

कृष्ण कुमार कालड़ा, जयपुर

'तारतम मंजरी' के सितम्बर 2019 अंक से हमने पूज्य ***श्री राजन स्वामी*** *जी द्वारा वर्ष 2018 में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा में की गई बीतक चर्चा पर आधारित लेखों की एक श्रृंखला प्रारभ की है। इसमें प्रत्येक अंक में एक विशेष प्रसंग/घटनाक्रम का संक्षिप्त उल्लेख कर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा कि यह हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण है तथा इससे हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिये। आशा है, पाठकों को यह श्रृंखला रुचिकर व उपयोगी लगेगी। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*

— संपादक

ज्ञान का अहंकार नहीं करना चाहिए

वि.स. 1716 में श्री जी नवतनपुरी से गाँव बसाने के लिये जूनागढ़ के पास सौरठ आते हैं। यह कार्य उन्हें जामनगर के मंत्री ने सौंपा था। इससे पूर्व श्री जी को एक हब्से (प्रबोधपुरी) में नजरबंदी की स्थिती में एक वर्ष व्यतीत हो गया था। स्मरणीय है कि श्री जी की नजरबंदी के पीछे बिहारी जी द्वारा जामनगर के मंत्री को उनकी झूठी चुगली करना था। इससे पूर्व बिहारी जी की पूर्व अनुमति लेकर जब श्री मिहिर राज सुन्दरसाथ के भंडारे के लिये सामग्री एकत्र कर रहे थे तो बिहारी जी को सुन्दरसाथ के बीच श्री मिहिर राज का बढ़ता प्रभाव सहन नहीं हुआ और द्वेषवश उन्होंने जामनगर के मंत्री से उनकी झूठी शिकायत कर दी कि श्री मिहिर राज सरकारी खजाने का दुरुपयोग कर समस्त सामग्री एकत्रित कर रहे हैं।

यद्यपि यह सबकुछ धामधनी की प्रेरणा से ही हुआ था क्योंकि उन्हें इस तरह का भंडारा करना स्वीकार्य नहीं था। साथ ही, वाणी के अवतरण का समय भी आ गया था, जिसके बिना सुन्दरसाथ की जागनी नहीं हो सकती थी। अतः एक वर्ष पश्चात् जब मुगल सल्तनत में गुजरात के सूबेदार कुतुब खां से संधि के पश्चात् जामनगर के मंत्री को उसकी पत्नियों से ज्ञात हुआ कि कारागार में बंद श्री मिहिर राज में कोई अलौकिक शक्ति विराजमान है तो उसने न केवल उनको सिरोपाव पहनाकर रिहा करने का निर्णय किया बल्कि जूनागढ़ के पास गाँव बसाने के लिये जमीन देकर सम्मानपूर्वक विदा किया। गाँव बसाने के उद्देश्य से श्री जी जूनागढ़ कान्हजी भाई के घर लगभग दो वर्ष रहे, जहाँ वे निरन्तर वाणी चर्चा भी करते थे।

जूनागढ़ में हरजी व्यास नाम के एक ब्राह्मण रहते थे, जो भागवत के विद्वान थे। कान्हजी भाई उन्हीं के यहाँ सेवा कार्य करते थे। एक बार जब व्यास जी बहुत अधिक अस्वस्थ हो गये और उन्हें मरनासन्न जान कर परिवार वाले दान–पुण्य करने लगे तो उन्होंने उन्हें यह कह कर रोक दिया किवे इस क्षर जगत के नहीं है और दान–पुण्य यमपुरी का साधन है अर्थात् इससे व्यक्ति जन्म–मरण के चक्र में फंसा रहता है जो वे कदापि नहीं चाहते। इसके साथ ही वे दो अपूर्ण इच्छाएं लेकर जा रहे हैं कि जिस बात को उन्होंने 'हाँ' कह दिया, उसे किसी ने नकारने का साहस नहीं किया तथा इस बात को उन्होंने 'ना' कह दिया उसे स्वीकारने की किसी ने हिम्मत नहीं दिखाई। व्यास जी के वचन सुनकर कि वे इस ब्रह्मांड के नहीं है, कान्हजी भाई के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हो गई कि कहीं ये ब्रह्मसृष्टि तो नहीं है। साथ ही, यदि ये किसी तरह से जीवित रह जाते हैं तो श्री जी से मिलकर इनकी यह चाहना भी पूर्ण हो जायेगी कि इन्हें इस संसार में खण्डित करने वाला काई नहीं है, अर्थात इनका अभिमान भी दूर हो जायेगा।

कान्हजी भाई ने जब श्री जी को यह सारी बात बताई तो श्री जी ने दिल में लिया और व्यास जी शीघ्र ही पूर्णतया स्वस्थ हो गये। इसके पश्चात् कान्हजी भाई व्यास जी की पहले से अधिक सेवा करने लगे जिससे वे प्रसन्न होकर उनसे कई बार कुछ मांगने का आग्रह करने लगे। आखिर, एक दिन कान्हजी भाई ने व्यास जी से कह ही दिया कि वे अपनी आध्यात्मिक जिज्ञासाओं के समाधान के लिये श्री जी से चर्चा करें तो उन्हें उनकी सेवा का फल मिल जायेगा। व्यास जी कान्हजी भाई की इस बात पर बहुत आनंदित हुए और उन्होंने श्री जी को तुरन्त सम्मानपूर्वक लाने के लिये कह दिया। तत्पश्चात् श्री जी व्यास जी के निवास पर ही रहने लगे तब दोनों के बीच श्रीमद्भागवत पर चर्चा होने लगी।

इस प्रकार, चर्चा करते हुए लगभग दो माह बीत जाते हैं। अचानक एक दिन जब श्रीमद्भागवत के दसवें स्कन्ध के एक प्रसंग के दौरान व्यास जी 84 लाख योजन वाले हीरे के महल का उल्लेख करते हैं तो श्री जी उनसे प्रश्न करते हैं कि यह स्थान किसका है तथा कहाँ है? लेकिन व्यास जी इसका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दे पाते–कभी इसे आदिनारायण का तो कभी अक्षर ब्रह्म का बताते हैं। पुनश्चः जब श्री जी उन्हें स्मरण कराते हैं कि उनके अनुसार ही महाप्रलय में पांच तत्व, तीन गुण तथा मूल प्रकृति (मोह सागर) का लय हो जाता है तब अक्षर ब्रह्म (जो त्रिगुणतीत हैं) का स्थान कहाँ रहता है। जब व्यास जी को इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं सूझता तो वे इसे आदिनारायण का स्थान बताते है, जो क्षीर सागर में रहते हैं। तब श्री जी ने उन्हें पुनः याद दिलाया की क्षीर सागर तो चौदह लोकों के अन्तर्गत ही आता है तो वह महाप्रलय में कैसे बच पायेगा। तब व्यास जी उत्तेजित हो जाते हैं और शास्त्रों के रचनाकारों को ही कटु वचनों से सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जब उन्होंने ही ऊंट–पटांग लिखा है तो वे इसका स्पष्ट उत्तर कैसे दे सकते हैं। कुछ समय पश्चात् जब व्यास जी शांत हो जाते हैं तो श्री जी उनसे कहते हैं कि वे उनके पास सच्चिदानंद परब्रह्म के आदेश से आये थे ताकि उनके हृदय में उत्पन्न तथाकथित ज्ञान के अहंकार को समाप्त कर सत्य का प्रकाश फैलाया जा सके। तदोपरांत श्री जी ने तारमत ज्ञान के प्रकाश में उन्हें समझाया कि यह सारा संसार आदिनारायण के स्वप्न का है जो अक्षर के मन अव्याकृत के मन का स्वाप्निक रूप हैं। अक्षर ब्रह्म जब सृष्टि की रचना का संकल्प करते हैं तो वह उनके सतस्वरूप (अहंकार), केवल (बुद्धि), सबलिक (चित्त) से होते हुए अव्याकृत (मन) में आता है, जिससे मोहसागर और आदिनारायण बनते है।

तब व्यास जी श्री जी के चरणों में गिर कर क्षमा मांगते हुए कहते हैं कि उन्हें जो अपनी विद्वता का अभिमान था, वे उसे इसी पल त्यागते हैं तथा अध्यात्म की सच्ची राह पर चलकर अक्षर से भी परे अक्षरातीत का अनुभव करना चाहते हैं। इसके पश्चात् श्री जी जब तक जूनागढ़ में रहे, व्यास जी अपने अंकुर के अनुकूल उनके चरणों के सानिध्य का लाभ लिया।

कुछ इसी प्रकार का घटनाक्रम ठठ्ठानगर में भी घटित होता है जब श्री जी वि. स. 1724 में वहाँ पधारते हैं। ठठ्ठानगर में कबीर पंथ के अनुयायी महात्मा चिंतामणि जी रहते थे, जिन्हें भी अपने ज्ञान का अत्यन्त अभिमान था। जब श्री जी उनसे मिले तो उन्होंने उनसे छूटते ही कहा– "यदि आप चाहें तो मैं आपको चतुर्भुज स्वरूप भगवान विष्णु तथा ज्योति स्वरूप या सहस्त्र फन वाले शेष नाग पर

विराजमान नारायण को दिखा सकता हूँ। यही नहीं, यदि आप झिलमिल करती ज्योति या दस अहनद नादों को सुनना चाहते हैं तो मैं वो भी कर सकता हूँ।" इस पर श्री जी ने चिंतामणि जी से आदर–पूर्वक कहा किवे तो मात्र तत्व ज्ञान लेने आये हैं तथा ब्रह्म और माया के यर्थाथ स्वरूप की पहचान करना चाहते हैं। तत्पश्चात् जब कमाल की एक साखी "कह्या कौड़ी तो हीरा भया, हीरा ते भया लाल, आधा भक्त कबीर है, पूरा भक्त कमाल" पर दोनों के मध्य गहन चर्चा हुई तो चिंतामणि जी श्री जी की व्याख्या से बहुत प्रभावित हुए तथा अपने शिष्यों को सम्बोधित होकर कहने लगे कि उनके गुरुदेव ने कहा था कि जो उक्त साखी का वास्तविक अर्थ बता देगा, वो यही दिव्य पुरूष हैं। तत्पश्चात् चिंतामणि जी ने अपने शिष्यों के साथ श्री जी के चरणों में प्रणाम किया।

चूंकि चिंतामणि जी के अन्दर परमधाम की आत्मा थी, अतः वे नियमित रूप से श्री जी की चर्चा सुनने आने लगे और सुनकर बहुत अधिक आनन्दित होते थे। रात्रि को श्री जी को एक किरंतन उतरा– "सुनो के सत के बनजारे।" इस किरंतन में परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों को आगाह किया गया है कि उन्हें अपने ज्ञान के अहंकार को छोड़कर सत्य की राह पर चलना चाहिए। प्रातः जब चिंतामणि जी ने इस किरंतन को पढ़ा तो उनके हृदय में इतनी गहरी चोट लगी कि उनका विवेक जागृत हो गया और उन्होंने संसार के मिथ्या सुखों को एक क्षण में ठोकर मारकर श्री जी के चरणों को पकड़ लिया। उन्होंने श्री जी से स्पष्ट कह दिया किवे उनके ज्ञान की लाठी से अपने अहंकार–रूपी काले कुत्ते को तुरन्त मार डालेंगे। साथ ही, अपने शिष्यों से भी कह दिया कि उनके अन्दर अखण्ड का कोई ज्ञान नहीं है एवं श्री जी ही साक्षात ब्रह्म–स्वरूप हैं।

प्रत्येक शिष्य की इच्छा होती है कि उसका गुरु पूर्ण हो, परन्तु पूर्ण तो केवल परमात्मा है। जो परमात्मा से जुड़ा होता है, वह अपनी पूर्णता का कभी भी, अहंकार नहीं करता क्योंकि जिस दिन उसने ऐसा कर लिया, उसकी पूर्णता समाप्त होने में एक क्षण भी नहीं लगेगा। अहंकार, अज्ञानता से आता है, जिसने अपना सर्वस्व मिटा दिया और मैं–खुदी को मार दिया, उसमें और परमात्मा में कोई भेद नहीं रह जाता।

इसी प्रकार, मस्कत बंदर में श्री जी के स्वरूप की पहचान न होने से एक बार तो महावजी भाई का विश्वास भी डगमगा गया था, जब श्री जी ने उनकी खण्डनी कर दी थी। लेकिन रात्रि को स्वप्न में जब श्री राज जी के जोश–स्वरूप ने उन्हें चांटा मारा तो उन्हें सत्यता का बोध हुआ। तत्पश्चात्, श्री जी के प्रति उनकी आस्था अटूट हो गई और विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने उनका साथ नहीं छोड़ा।

इसी प्रकार, काशी के एक पंडित भट्टाचार्य जी को अपने ज्ञान पर बहुत अभिमान था, लेकिन जब वे अपनी पत्नी के कहने पर श्री जी से शास्त्रार्थ करने पन्ना जा रहे थे तो धामधनी की ऐसी कृपा हुई कि श्री जी से मिलने से पूर्व ही राह में खेलती हुई कुछ बालिकाओं ने ही उनका अहंकार समाप्त कर दिया। बाद में एक बार पुनः श्री जी के प्रति उनका विश्वास डगमगाने लगा जब पन्ना से कोसों दूर स्थित खम्भात की एक महिला सुन्दरसाथ के गर्म खीर का भोग लगाने से श्री जी की जीभ जल गई, तो जब तक उन्होंने स्वयं खम्भात जाकर इस तथ्य की पुष्टि नहीं कर ली, उन्हें संतुष्टि नहीं हुई।

उक्त घटनाक्रमों से हमें यही शिक्षा मिलती है कि कभी भी ज्ञान का अहंकार नहीं करना चाहिए। लोकेषणा (प्रतिष्ठा की इच्छा) एवं दारेषणा (अनुयायिओं का मोह) को छोड़ पाना बड़े–बड़े ज्ञानी व तपस्वियों के लिये भी कठिन होता है। ज्ञान का समुद्र अगाध है। इसलिए मनुष्य को ज्ञान के क्षेत्र में बड़ी–से–बड़ी उपलब्धि प्राप्त होने पर भी अपने मन में यह मिथ्या धारणा नहीं पालनी चाहिए कि दुनिया में उसके समान कोई ज्ञानी नहीं है। विद्या ददाति विनयम् – अर्थात् ज्ञान से विनम्रता आती है, अतः इसका उद्देश्य सबका कल्याण होना चाहिए। यदि हर कोई अपनी विद्वता का झंडा गाड़ने का प्रयास करेगा तो समाज में वर्ग संघर्ष होगा। हमें याद रखना चाहिए कि हर व्यक्ति जहाँ अपने–आप में कुछ विशिष्ठताएं लिए होता हैं, वहीं उसमें कुछ कमियां भी होती हैं। लेकिन जब मनुष्य अपने तथाकथित ज्ञान का अनावश्यक रूप से डंका बजाता है तो यह उसकी अज्ञानता का ही परिचायक होता है। काई भी सच्चा ज्ञानी ऐसी भूल कभी नहीं करता। बल्कि उसे चाहिए कि अपने ज्ञान को परमात्मा–रूपी सागर की कृपा–रूपी एक बूंद माने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए इसे मानवता के कल्याण में लगावे, न कि मिथ्या पांडित्य के प्रदर्शन में।

यही बात हम सुन्दरसाथ को भी अपने आचरण में लानी चाहिए। धामधनी की कृपा से यदि हमें ब्रह्मवाणी का कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया है तो इसका अहम न पालकर इसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि यदि आज समाज में हमारा सम्मान होता हैं तो केवल श्री प्राणनाथ जी की ब्रह्मवाणी के कारण वरना हमें कोई पूछने वाला नहीं होता। वैसे भी जहाँ तक आत्मा की जागृति का प्रश्न है, वह केवल शब्द ज्ञान आत्मसात करने से नहीं हो सकता। इसके लिये हमे ज्ञान को अपने आचरण में भी उतारना पड़ेगा।

दुःखों से छूटने का उपाय

आचार्य सुभाष, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

वेदव्यास जी से ऋषियों ने पूछा के सर्वसुलभ और सर्वग्राहिय दुखों से छूटने का उपाय बताने की पा करें। व्यास जी कहते हैं आप लोगों ने बहुत सुंदर सवाल पूछा है। जो भी इस सवाल–जवाब को सुनेगा, विचारेगा उसकी हीनता, काम, क्रोध, लोभ, भय, मोह, अशांति, अशुभ कर्म करने की प्रवृत्ति मिट जायेंगे और उसके जीवन में शांति का प्रकाश होगा। जैसे पिता बालको को कहानियाँ, किस्सों से संकेत करके अनुचित मार्ग से बचाकर उचित मार्ग पर ले चलता है, ऐसे ही मनुष्य को इन्द्रियों के विषय–विकारों से बचाने के लिए ध्यान और स्वध्याय, आत्म निरिक्षण, निदिध्यासन के पावन मार्ग पर चलना ही होगा।

दुःख से कैसे छूटे?

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानां उत्तरोत्तरा पाये तदन्तरापायादपवर्गः (न्याय 1/1/2) अर्थात दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष और मिथ्याज्ञान उत्तरोत्तर अर्थात् आगे–आगे के नष्ट हो जाने पर उसके अनन्तर के अव्यवहित पूर्व के नाश हो जाने से मोक्ष होता है। इसमें दुःख, जन्म, प्रवृत्ति, दोष और मिथ्या ज्ञान . ये पाँच पदार्थ कहे गए हैं। उसमें उत्तर अर्थात् अगला पदार्थ अपने से पहले का कारण है। इस प्रकार दुःख का कारण जन्म, जन्म का कारण प्रवृत्ति, प्रवृत्ति का कारण दोष और दोष का कारण मिथ्या ज्ञान है।

यह एक तर्कपूर्ण व्यवस्था है कि कारण के नाश हो जाने पर कार्य का नाश हो जाता है। फलस्वरुप मिथ्या ज्ञान के नाश से दोषों का नाश, दोषों के नाश से प्रवृत्ति का नाश, प्रवृत्ति के नाश से जन्म का नाश और जन्म के नाश से दुःखों का नाश सम्भव है।

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः (न्याय 1/1/22) अर्थात जो दुःख का अत्यन्त विच्छेद होता है, वही मुक्ति कहालाती है।

महर्षि कपिल मुक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं .

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः (सांख्य 1/1)

तीन प्रकार के दुःखों की अतिशय निवृत्ति मोक्ष है।

संसार में दुःखों से छूटने के लिए धन आदि अनेक उपायों का प्रयोग करते हैं। थोड़े–बहुत समय के लिए हम छुटकारा पाते भी हैं, पर फिर हमें शीघ्र ही अन्य दुःख–समूह आ घेरता है। किसी एक दुःख–निवृत्ति के काल में भी अन्य दुःख आते रहते हैं। इस प्रकार सांसारिक साधनों के द्वारा न तो हमारे दुःख अधिक समय के लिए छूट पाते हैं और न उतने काल में नैरन्तर्य की स्थिति आ पाती है। क्योंकि जितने समय के लिए कोई कष्ट दूर होता है, उसके अन्तराल में अन्य कष्ट आ उपस्थित होते हैं। अत एव इन अवस्थाओं को परम पुरुषार्थ, मोक्ष या अपवर्ग नहीं कहा जा सकता। मोक्ष की अवस्था वही है, जहाँ तीनों प्रकार के दुःखों की अत्यंत निवृत्ति हो जाये।

दुःख के समस्त प्रकारों का तीन वर्गों में समावेश किया गया है . आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक। आध्यात्मिक दुःख वह है जो अपने आन्तरिक कारणों से उत्पन्न होता है। यह दो प्रकार का है . एक शारीरिक, दूसरा मानसिक। शरीर की वात, पित्त, कफ आदि की विषमता से अथवा आहार–विहार आदि की विषमता से जो दुःख उत्पन्न होता है, वह शारीरिक दुःख कहा जाता है। जो काम, क्रोध, ईष्या, द्वेष, राग आदि मनोविकारों के कारण दुःख उत्पन्न होता है उसे मानसिक दुःख कहते हैं।

आधिभौतिक वह दुःख है जो अन्य भूत–प्राणियों से हमें प्राप्त होता है। साँप, बिच्छू आदि के काटने से, अन्य हिंसक प्राणियों द्वारा आघात पहुँचाने से, किसी के मारने–पीटने अथवा कटु वाक्य कहने से, इसी ढंग की किसी भी रीति से होने वाला दुःख आधिभौतिक दुःख कहलाता है।

आधिदैविक दुःख वह है जो वर्षा, आतप, हिमपात, विद्युत्पात, भूकम्प तथा वायु–जनित उत्पातों के कारण उत्पन्न होता है। इन तीनों प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति, अथवा आत्मा का इन दुःखों से अलग हो जाना अत्यन्त पुरुषार्थ अर्थात् मोक्ष कहा जाता है।

विकारों से बचने का एक ही उपाय है अपने आत्मा स्वरूप में स्थिर होना। समय, शक्ति का दुरूपयोग करने वाले की दुर्गति होती है। सदुपयोग करने वाले की सद्गति होती है। परब्रह्म की प्राप्ति होती है। व्यर्थ के चिंतन, वाद–विवाद से बचे। इन्द्रिय–निग्रह करें। भले ही हमारे अंदर हजारों इच्छायें पैदा क्यों न हो, लेकिन इच्छाओं को महत्व न देकर अपने आत्म कल्याण को महत्व देना चाहिए। इच्छायें कभी भी शांत नहीं होती और बढती रहती है। आग्नि में घी डालने के समान। इन्द्रियों को रोके मन में और मन को रोके मति में और मति को स्थिर करें परमात्मा में। परब्रह्म का स्वरूप शांत हैं, चैतन्य रूप हैं, आनंद रूप हैं, ज्ञान स्वरूप हैं। इसलिए शांत स्वरूप परब्रह्म में मन, बुद्धि को स्थिर करने से मन, बुद्धि भी शांत हो जाते

हैं। शांत स्थिति को प्राप्त करना ही हमारा परम लक्ष्य है।

शांत अवस्था को प्राप्त करने हेतु क्षमा को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। क्षमा से क्रोध के दुर्गुण को जितना चाहिए। निसंकल्पता से कामनाओं को जीतना चाहिए। मन में कामनाएं प्रकट हो जाये तो छोड़ देना चाहिए। इधर–उधर की आपा–धापी छोड़ देना चाहिए। मानव तभी सुखी हो सकता है जब निसंकल्पता से तुच्छ कामनाओं को जीतता है। निर्भय से भय को जीतता है। हमें भय किस बात का आत्मा तो अजर–अमर है। शरीर नष्ट होने वाला है। मर जायेंगे, मर जायेंगे डर किस बात का है। अमर और नित्य में भय कैसा? अप्रमाद, सावधानी से भय को जीतो। धैर्य के द्वारा विकार, कामनाओं और व्यर्थ के चिंतन को जीते, चंचलता को ज्ञान एवं ध्यानाभ्यास से जीते। चंचलता को जीतेंगे तो एकाग्र हो पायेंगे। एकाग्रता की शक्ति अदभुत होती है। शास्त्रों में सभी तपस्याओं में एकाग्रता श्रेष्ठ माना जाता है।

विकारों को शांत करने के लिये हितकर भोजन खाना चाहिए। स्वास्थ्य के अनुकूल खाना चाहिए, मजा लेने के लिए नहीं खाना चाहिए। कम खाना चाहिए। सुपाच्य खाना चाहिए, ताकि ध्यान और चिंतन में बाधा ना पडे। सम्पूर्ण विघ्नों को जीतने वाला, लोभ–मोह से परे करने वाला परब्रह्म का ध्यान, परब्रह्म धाम–स्वरूप और लीला से संबंधित ग्रन्थों का स्वध्याय एवं सत्संग अवश्य सुनना चाहिए।

आत्म उन्नति हेतु आवश्यक कार्य को छोडकर अधिक से अधिक मौन रहें। एकांत में रहें। स्नेह ही मनुष्य को बंधन फसाता है। संसार अनित्य है। किस–किस से बाहर प्रीति करेंगे। परब्रह्म के सिवाय कहीं भी प्रीति करी, पति–पत्नी में प्रीति काम जगायेगी, पैसों में प्रीति लोभ जगायेगी, परिवार में प्रीति मोह की पाश बाँधेगी। प्रसिद्धि और मान–सम्मान की प्रीति अहँकार की आग में जलाएगी इसीलिए परब्रह्म की प्रीति के सिवाय बाकी की प्रीतियों से अपने को पृथक रखना चाहिए। साधक व्यक्ति वाणी बोलते समय हमेशा ही सावधानी से विचार करें कि 10 शब्द की अपेक्षा 5 शब्द में सार बात कह दें। वाणी एक शक्ति है उसका दुरूपयोग ना करें। कम बोले, सारगर्भित बोले, आत्मा–परमात्मा संबंधित वाणी ही बोलें, व्यर्थ न बोले। सच्चाई, स्नेह से बोले। अहंकार रहित बोले तो उसकी वाणी सुनकर लोग भी सुखी होंगे और खुद भी सुखी रहेगा। वाणी को मन में, मन को बुद्धि में और बुद्धि को परब्रह्म के ज्ञान में विलय करें। और ज्ञान को शांत आत्मा में विलय करें इससे आत्मा, परब्रह्म के सुख को प्राप्त करेगा। आत्मा ज्ञिज्ञासु–पिपासु काम–विकार से बचे, हाड–मास के शरीर में रखा क्या है? जो एक दिन लकड़ी के समान जलकर राख होने वाला है।

क्रोध अग्नि है, तपस्या और पुण्य को नष्ट कर देता है। लोभ दल–दल है, खपे–खपे में आदमी

खप जाता है। भय मनुष्य की योग्यताओं को हर लेने वाला है। और स्वप्नों को ना संजोये सपना तो सपना है। बालू के घर के समान। कोई भी मनुष्य सपने की बातों को जैसे जाग्रत अवस्था में महत्व नही देता उसी प्रकार यह संसार भी सपना है। सफलता आये तो फूलें नही, क्योंकि सफलताएं आकर चली जाती हैं। विफलताएं भी जीवन में आकर चली जाती हैं। किसका क्या महत्व है? हानि तो हानि है, जिसको लाभ बोलते है उसमें भी कोई ताकत नही है। जिस लाभ से आत्म–लाभ न हो, जिस लाभ से मोक्ष लाभ न हो, जिस लाभ से परमात्म लाभ न हो, उन लाभों से क्या फायदा?

लेकिन ये सब बीतता है तब भी जो हमारा साथ नही छोड़ता वो साक्षी, चैतन्य, परब्रह्म मेरा अपना है। हमारे जीवन में वे दिन कब आयेंगे हानि–लाभ, मान–अपमान, निंदा–स्तुति, सफलता–विफलता नगण्य लगेंगे। सर्वव्यापक परब्रह्म हमारे धाम दिल में कब चमकेगा, ऐसे दिन कब आयेंगे? ऐसे दिन अभी आ सकते हैं अगर हम सब सावधान होकर ध्यान रूपी गहराइयों में डुबकी लगायेंगे तो। ब्रह्मवाणी का चिंतन–मनन करेंगे तो।

मनुष्यों को प्रतिदिन कुछ न कुछ धार्मिक ग्रन्थों का स्वध्याय अवश्य करना ही चाहिए। गृहस्थी मनुष्य कमाई का कुछ हिस्सा दान अवश्य करे। सत्य बोलें, झूठ का सर्वथा त्याग करें। आपस में मिल जुलकर के रहें, लेकिन आपसी ममता को छोड़ें। स्वभाव में क्षमा और कोमलता का सद्गुण भर लें। आन्तरिक और बाह्य रुप से शुद्ध रहें, पवित्र रहें। आचार, व्यवहार शुद्ध रखें। इन्द्रियों का संयम करके परब्रह्म के प्रेम में डूबे।

मनुष्य दुखों से कैसे छूट सकता है? इस विषय का समाधान हम–सेवा पूजा से लेते है। हम सभी सुन्दरसाथ सेवा–पूजा में भी प्रतिदिन बोलते है–

निशदिन ग्रहिये प्रेमसों,
श्री युगल स्वरूप के चरन।
निर्मल होन यहीसों, और धाम बरनन।।
इन विध नरक से छुटिये,
और उपाय कोइ नाहिं।

भजन बीना सब नरक है,
पचि पचि मरिये मांहि।।
एक आत्म धनी पहचानिये,
निर्मल यही उपाय।
श्री महामति कहें समझ धनी को,
ग्रहिये सो प्रेमे पाय।।

इतना सुंदर उपाय बताया कि किस प्रकार निष्पाप होकर मनुष्य आत्मतेज के प्रभाव से सम्पन्न रहे। परम पद को प्राप्त हो जाये। बुद्धि में पुण्य आ जाएँ, मन थोडा वश में हो जाये। और हमेशा पवित्र रहे उसका जीवन धन्य–धन्य हो जाता है। धन कमाकर, अटालिकाए बनाकर मर गयें तो धिक्कार है ऐसे मनुष्यों को। छल–कपट करके या ईमानदार होकर भी मर गया तो तुच्छ है जीवन। मरने वाले शरीर में अपनी अमरता का ज्ञान सुन लें व्यवहार में

भी अपने अमरता का चिंतन कर लें। दुःख आता है परन्तु दुःख रहेगा नही, उसको जानने वाला मैं अमर हूँ। सुख आये तो भी एक दिन मर जाना है। इस सुख का बहुजन हिताय में उपयोग करना चाहिए। सुख–दुख, लाभ–हानि, सफलता–विफलता मरती है लेकिन आत्मा अमर है। अपने कर्मो की, भाव की शुद्धता का ध्यान रखें। विवेक शुद्ध रखें। यही सफलता का श्रेष्ठ मार्ग है।

शुद्ध विवेक क्या है?

आत्मा अमर है और नष्ट होने वाला संसार और शरीर है। नित्य आत्मा और परमात्मा है, अनित्य संसार और शरीर है। सुख रूप आत्मा–परमात्मा है, दुःख रूप संसार और शरीर है। ये विवेक करें तो शुद्ध चिंतन होगा। शुद्ध तो केवल परमात्मा ही है बाकि सब तो अशुद्ध है। शुद्ध चिंतन से आदमी शुद्ध हो जाता है और अशुद्ध चिंतन से अशुद्ध हो जाता है। अशुद्ध चिंतन से अशुद्ध कर्म होते हैं। अशुद्ध कर्मो से राग–द्वेष की आग जलाकर व्यक्ति दुखी होते हैं। दुःख का कोई कारण नही है, नाहक से लोग दुखी हो रहे हैं। न जाने कितनो के आगे गिडगिडाते हैं। कितना झूठ बोलते हैं, कितने धन चुराते हैं। वे मनुष्य विवेक के बिना कुछ का कुछ बोलते रहते हैं, कुछ का कुछ करते रहते हैं। इससे मनुष्य जीवन का कीमत घट जाता है। कबीर जी ने क्या सुन्दर कहा है–

वाणी ऐसी बोलिए मनवा शीतल होय।
औरों को शीतल करे आप भी शीतल होय।।

भिड़ाना, झगडना ये मन का, वाणी का दोष है। जीवन बड़ा कीमती है और अल्प–जीवन है। और आत्मा–परमात्मा को पाने का काम बहुत ऊँचा है। जितनी भी सफलता मिल गयी धिक्कार है उसको। जितनी भी विफलता हुई तुच्छ है। सफलता, विफलता का महत्व नही है। परमात्मा प्राप्ति का महत्व है। सुख–दुःख में सम रहने का महत्व है। निंदा–स्तुति में सम रहने का महत्व है। शरीर को फुलाना, सूजना महत्वपूर्ण नही है। शरीर को कमजोर करना महत्वपूर्ण नही है। लेकिन जिसके आधार से यह शरीर चलता–फिरता है उस आत्मा को जानना–मानना महत्व पूर्ण है। अंत में, कठोपनिषद के एक श्लोक से लेख को विराम देता हूँ–

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

अर्थात मानव शरीर पाकर यदि इस जन्म में परब्रह्म को जान लिया तब तो हमारा जीवन सफल है, यदि इस जन्म में ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं किया तो बहुत बड़ी हानि हो जायेगी (अर्थात जन्म–मरण के चक्कर में फंस कर अनन्त दुखों को भोगना पड़ेगा)। अतः सर्वत्र सभी प्राणियों में सर्वव्यापक ब्रह्म का विशेष रूप से चिंतन करके बुद्धिमान महापुरुष इस शरीर (लोक) से मुक्त हो जाते हैं।

इश्क बिना न पाइए नूरतजल्ला हक

ज्योती निजानन्दी, सरसावा

सुन्दरसाथ जी, परमधाम में पूर्णब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत एवं उनकी लाडली ब्रह्मात्माएं हमेशा आनन्द की लीला में मग्न रहती थी, वाहेदत के कारण सभी अपने अपने इश्क को बड़ा कहती थी, इश्क के बल पर ही सभी ब्रह्मात्माएं कूदा करती थी, यही इश्क रब्द सभी ब्रह्मसृश्टियों के इस ब्रह्माण्ड में आने का एक कारण भी बना।

एक पातसाही हक की
और वाहेदत का इश्क।
सो देखलावने रूहों को
पहले दिल में लिया हक।।

सुन्दरसाथ जी, श्री कुलजम स्वरूप जो धामधनी का वाङ्मय कलेवर है धामधनी के ज्ञानमयी स्वरूप के चिन्तन–मनन, मन्थन के बाद तो सभी रूहें हक की पातसाही एवं परमधाम के इश्क के बारे में अच्छी तरह समझ ही गयी होंगी। वाणी में धामधनी कह रहे हैं–

रब्द रूहों ने हक सो
किया इश्क का जोय।
सो इश्क बिना इस अर्श में
पैठ न सके कोय।।

परमधाम में रूहों ने राज जी से जो इश्क रब्द (प्यार भरी बहस) किया था जब तक उन रूहों में वह इश्क नहीं आता तब तक कोई भी रूह परमधाम में प्रवेश नहीं कर सकती। धामधनी वाणी में कहते हैं –

जब इश्क इनों आवसी तब देखेगी मुझको।
इश्क बिना इन अर्श में मै मिलूं नहीं इनको।।

यह तो स्पष्ट हो ही जाता है वाणी की विभिन्न चौपाइयों के द्वारा कि इश्क के बिना कोई भी रूह न तो अक्षरातीत के दीदार कर सकती है न ही परमधाम के पच्चीस पक्षों मे विचरण कर सकती है, परिक्रमा ग्रन्थ में परमधाम के पच्चीस पक्षों का वर्णन है पर शुरूआत के प्रकरण में ही धामधनी महामती जी के द्वारा क्या कह रहे हैं–

अब कहूं रे इश्क की बात
इश्क शब्दातीत साक्षात्।

जो कदी आवे मिने शब्द चौदह
तबक करे रदद्।।

इश्क और पूर्णब्रह्म परमात्मा एक ही है, प्रेम और ब्रह्म दोउ एक है, जिस आत्मा के धाम हृदय में परमधाम एवं परब्रह्म के प्रति इश्क आ जाता है उसके लिए ब्रह्माण्ड का कोई अस्तित्व नहीं रह जाता, अध्यात्म के चरम शिखर पर पहुचने के पश्चात् भले ही पंचभौतिक तन इस संसार में रहता है किन्तु आत्मिक दृश्टि परमधाम एवं परब्रह्म के ध्यान में ही विचरण करती है, परिक्रमा के तीसरे प्रकरण में कहा है–

अब आओ रे इश्क भानू हाम
देखूं वतन अपना निज धाम।
करू चरण तले विश्राम विलसो
पिया जी सो प्रेम काम।।

श्री महामती जी की आत्मा कहती है कि हे इश्क अब तू मेरे दिल में आ जा जिससे मैं अपनी चाहना पूरी कर लूं, मेरी यही इच्छा है कि मैं अपने मूल घर परमधाम को देख लूं अपने प्रियतम के चरण कमलों के दर्शन में ही आनन्द प्राप्त करती रहूं और इसी प्रकरण में आगे कहा है–

कई वाणी इश्के उपजी
कई इस्के पड़ी पुकार।
ए रूहें भी वास्ते इश्क के
हाय हाय हुइया ना खबरदार।।

कई धर्मग्रन्थों में इश्क अर्थात् प्रेम की महिमा के बारे में बताया है कबीर दास जी ने कहा है–

पोथी पढ़ पढ़ जग भया
भया न पण्डित कोय।
ढाई आखर प्रेम के
पढ़े सो पण्डित होय।।

एकमात्र प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है धामधनी अक्षरातीत कितने व्यथित शब्दों में अपने हृदय की वेदना को प्रकट कर रहे हैं–

हाए हाए इश्क हक का,
समझे नहीं मोमिन।
ना तो अरवाहें थी अर्स की,
पर दिल न हुआ रोशन।।

इश्क की महिमा जानने के बाद भी कि धामधनी को इश्क के बिना नहीं पाया जा सकता पर परमधाम की रूहों के दिल में प्रकाश नहीं हुआ और वह उस इश्क को अब तक समझ ही नहीं पाई।

जब हम पहली बार ब्रज में आए जिसे पूरी नींद कहा गया है फिर भी गोपियों के तन में जो ब्रह्मसृश्टियों की आत्मा थी उन्होंने इस भवसागर को गोपद वच्छ के समान माना वाणी में कहा भी है–

तू बल कर कछु अपना,
चल राह तामसियो सूर।

ब्रह्मसृष्टि निकसी ब्रज से,
देखो क्यों कर पहुंची चरणों हजूर।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जिसे आधी नींद एवं आधी जाग्रति कहा गया है, रास में थोड़ा से विरह हो जाने पर भी वृन्दावन को शमशान के समान कह दिया, आज इस जागनी के ब्रह्माण्ड में वाणी के माध्यम से धामधनी पल पल हमें सचेत कर रहे हैं फिर भी अगर हम जागते नहीं तो दोश हमारा है, सिन्गार ग्रन्थ में अक्षरातीत इन्द्रावती जी के धाम ह्रदय में बैठकर क्या कह रहे हैं–

जो कदी इश्क आवे नहीं
तो मोमिन बैठे रहे क्यों कर।
अर्स हक से बेसक होए के
क्यों रहे अर्स विगर।।

धामधनी अक्षरातीत ने हमें परमधाम व अपने विशय में बेशक इलम दिया है तो क्या रूहो को कुछ प्रयास नहीं करना चाहिए, अगली चौपाई में कहा है–

इस्क क्यों न उपजे रूहों करना सोई उद्यम।
राह सोई लीजिए जो आगू हादिए भरे कदम।।

बीतक के माध्यम से हम सभी सुन्दरसाथ जानते हैं जो राह हमारे हादी श्री देवचन्द्र जी एवं श्री प्राणनाथ जी ने चलकर दिखाई हम सभी सुन्दरसाथ उसी राह पर चलें तो इश्क क्यों नहीं उत्पन्न होगा, परिकमा ग्रन्थ में धामधनी सूरत इश्क पैदा होने की इस प्रकरण में कह रहे हैं–

तुमको इश्क उपजावने करूं सो अब उपाय।

मै तुम्हारे अन्दर इश्क पैदा करने के अनेक उपाय करता हूं, जब तक इश्क नहीं आता हमारी आत्मा कभी भी परमधाम के आनन्द का रस पान नहीं कर सकती, हर सुन्दरसाथ चाहता है कि हमारे अन्दर इश्क आ जाए, कोई भी अपना बुरा नहीं चाहता, दुर्योधन भी कहता है–

जानामि धर्मं न च मे प्रवृति
जानामि अधर्मं न च मे निवृति।

मै जानता हूँ धर्म क्या है, मेरा मन उसमे लगता ही नही, यह भी जानता हूँ अधर्म क्या है लेकिन अधर्म छोड़ने को मेरा मन ही नही करता, उसी तरह से हम भी जानते हैं कि माया दुख का निधान है और धामधनी सुख का निधान (खजाना) है पर दुख को छोड़ना सुख के निधान धामधनी को पाना कोई नहीं चाहता कारण क्या है हमारे जीव के संस्कार।

एक शराबी है शराब पीता है लेकिन जिस दिन वह शराब छोड़ देता है उसको शराब से घृणा हो जाती है, वह शराब की तरफ देखना भी नहीं चाहता। उसी प्रकार माया भी शराब है। माया की शराब के नशें मे जीव न जाने कितने जन्मों से धुत चला आ रहा है जब ज्ञान का प्रकाश मिलता है प्रियतम के प्रेम की सुगन्धी की एक–झलक सी मिलती है तो वह सब कुछ छोड़कर उसमें डूब जाना चाहता है माया का विश माया के सारे हथियारों को

नष्ट करने के लिए धाम धनी का प्रेम ब्रह्मास्त्र है।

संसार का प्राणी संसारिक द्रव्यों के पीछे भागता है। जिसने अनन्त ब्रह्माण्डों को बनाया है वह उसके दिल मे बसा है तो उससे ज्यादा आन्दमय कौन होगा धाम धनी कहते हैं कि मै माया के संसार मे बैठकर भी तुम्हारें अन्दर इश्क पैदा करना चाहता हूं तांकि यहीं बैठे–बैठे तुम परमधाम के पच्चीस पक्षों में विहार करो धामधनी कहते हैं–

कोई आगे कोई पीछे अव्वल
इश्क लेसी सब कोय।
पहले इस्क जिन लिया
सोई सोहागिन होय।।

धामधनी कहते हैं सभी ब्रह्मसृष्टियों को चाहे आगे या आखिर में इश्क तो सब को मिलेगा जो पहले इश्क लेगी वही सोहागिन कहलाएगी–

जो लो इश्क न आइया,
तो लो करो उपाय।
यो ही इश्क जोस आवसी,
पल में देसी पट उड़ाय।।

धनी का इश्क पाने के लिए चितवनी की राह बताई गई है पहले प्रेम का जोश प्राप्त होगा धनी के दीदार के रस में डूबने पर राज जी की मेहर से उनका इश्क प्राप्त हो सकता है चितवनी में डूबकर परब्रह्म की शोभा को हृदय में बसाना ळे इन्द्रावती जी ने राज जी से कुछ नहीं मांगा–

ना चाहूं मै बुजरकी ना
चाहू खिताब खुदाय।
इश्क दीजे मोहे आपना
मोहे याही सो मुद्दाय।।

कोई सुन्दरसाथ राज जी से हुक्म मागंता है कोई इलम मांगता है कोई जोश मांगता है क्या सुन्दरसाथ जी हम कभी आत्म जागृती के लिए पाठ रखते हैं? क्या हम राज जी से राज जी को मांगते हैं?

राज जी हमें माया का कुछ नहीं चाहिए आप हमारे हृदय में बस जाओ जिस दिन यह भावना आ जाएगी धाम धनी हृदय में बसने में देर नहीं करेंगे।

जब चढ़े प्रेम के रस हुए धाम धनी बस।
इश्क जिन विध उपजे मैं देउं सोई जिनस।।

अक्षरातीत ने इश्क जिस प्रकार से उत्पन्न हो सभी उपाय बताए हैं। अक्षरातीत के दिल में प्रेम के अनन्त सागर हैं यदि आप अक्षरातीत को अपने अन्दर हृदय में बसा लेंगे तो आपके अन्दर भी इश्क के पूर के पूर बहने लगेगें।

यों तैयारी कीजियो आगू करनी है दौड़।
सब अंग इश्क लेय के निकसो ब्रह्माण्ड फोड़।।

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आखां खोल

राजदीपक, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

सुन्दरसाथ जी, हम परमधाम से इस नश्वर जगत में माया का खेल देखने के लिए आए है। हमने परमधाम में धामधनी से माया का खेल देखने की इच्छा की थी, जिसके परिणाम स्वरूप यह ब्रह्माण्ड बना और हमें इस नश्वर जगत में आना पड़ा। परमधाम के मूल मिलावे जो इश्क रब्द हुआ कि, किसका इश्क बड़ा है, धामधनी श्री राज जी का या श्री श्यामा जी का या फिर हम सभी सखियों का लेकिन वास्तव में परमधाम की उस वाहेदत की भूमिका में यह संभव नहीं था, कि यह निर्णय किया जा सके कि किसका इश्क बड़ा है। वास्तव में यदि अगर देखा जाए तो हम सभी का स्वरूप एह ही है, वहां पर किसी का भी प्रेम कम या ज्यादा नहीं होता है, सबमें समान प्रेम है, वहां पर सब एक दूसरे से समान रूप से प्रेम करते है,। यही बताने के लिए अपने इश्क और साहेबी की पहचान कराने के लिए धामधनी ने हमें इस नश्वर जगत में भेजा। परमधाम से इस मायावी जगत में आतें समय धाम धनी ने कहा था–

हकें कहया उतरते,
तुम जात बीच नासूत।
आप वतन जिन भूलो मोहे,
मैं बैठा बीच लाहूत।।

अर्थात् परमधाम से इस खेल में आते समय श्री राज जी ने ब्रह्मसृश्टियों से कहा कि तुम माया का खेल देखने के लिए मृत्यु लोक में जा रहीं हो। वहां जाकर तुम मुझे और अपने परमधाम को न भूल जाना। मैं यहां परमधाम में बैठे हुए तुम्हें देखता रहूंगा। तब हम सभी सखियों ने धामधनी से कहा–

तब फेर कहया अरवाहों ने,
हम क्यों भूले तुमको।
तुम पेहेले किए चेतन,
खेल कहा करे हमको।।

अर्थात तब पुनः हम सभी आत्माओं ने धाम धनी से कहा कि भला हम आपको कैसे भूल सकती है? जब आनपे हमें पहले ही सावधान कर दिया है तो यह माया का खेल हमारा क्या कर लेगा?

अखण्ड परमधाम में अनादि काल से रहने पर भी श्यामा जी और सखियों में से किसी को भी यह पता नहीं था कि श्री राज जी की साहिबी क्या है और इश्क की मारिफत क्या है?

अब यहां प्रश्न यह खड़ा होता है कि अक्षरातीत के दिल के स्वरूप श्यामा जी एवं सखियों को भी यदि इश्क और बादशाही की पहचान नहीं है तो यह कैसे सम्भव है?राज जी के दिल में जब इल्म का सागर है तो उनकी अंगरूपा सखियां इस तथ्य को आज दिन तक क्यो नहीं जान पायी थी। इसके संबंध में धामधनी यही कह रहे है कि परमधाम की वहदत से एक कण भी अलग नहीं हो सकता और अलग हुए बिना कोई भी व्यक्ति श्री राज जी के इश्क और साहिबी की पहचान नहीं कर सकता है।

अर्स से जुदे होए के, ए देखे जो कोए।
इस्क साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए।।

यदि कोई परमधाम से अलग होकर देखता है, तब वह श्री राज जी के अनंत प्रेम और स्वमित्व की श्रेश्ठता की पहचान कर सकता है।

परमधाम से इस नश्वर जगत में आते समय जैसे ही हमने इस जगत में प्रवेश किया वेसे ही हमारी परमधाम की सारी बाते भूल गई और शरीर भाव को प्राप्त हो गई। न तो हमें अपना परमधाम याद रहा और न धाम धनी ही याद रहें यहां तक कि हम अपने निजस्वरूप को भी भूल गई। ऐसी स्थिति में हमारी आत्मा की जागृती के लिए धाम धनी ने हमें यह तारतम वाणी दी जिसके द्वारा हम अपने निजघर निजस्वरूप एवं धाम धनी की पहचान कर सकें आज इस तारतम वाणी को अवतरित हुए कई वर्श बीत चुके है, लेकिन हमारी आत्मा आज तक जागृत नहीं हो पाई है। हमें इस विशय पर बहुत ही गहन चिंतन करना होगा कि आखिर हम अपनी आत्मा को क्यों जागृत नहीं कर पा रहे है, हमसे आखिर चूक कहां से हो रही है क्या हम धाम धनी के कथनों के अनुसार चल रहे है। आज के इस समय में देखा जाए तो लगभग सभी सुन्दरसाथ को इस तारतम वाणी का ज्ञान ता बहुत है। लेकिन हम इस ज्ञान को सिर्फ दिमाग में ही रखे हुए हम इस ज्ञान को अभी तक दिल में नही उतार पाए है। और न ही रहनी में हि ला सके है। हमारा यह ज्ञान सिर्फ दिमाग से जुबां तक है।

वर्तमान समय में सभी सुन्दरसाथ में जुबां तक है। में एक होड़ सी लगी हुई है, सभी लोग एक–दूसरे की जागनी करना चाहते है, हर कोई चर्चा प्रवचन में लगे रहते है, लेकिन कोई भी अपनी आत्मा की जागनी नही करना चाहता है। अगर हर कोई अपनी–अपनी आत्मा की जागनी में लग जाए तो सभी की जागनी स्वतः ही हो जाएगी। और

तारतम वाणी में धाम धनी के द्वारा कहे हुए वचनों को सिर्फ दिमाग में न रखकर हमें हर पल उसे अपनी रहनीं में लाने का प्रयास करना चाहिए।

जैसे एक आदमी है उसे सर्दी जुकाम और बुखार हो जाता है, तो वह दवा लेने के लिए डॉक्टर के पास जाता है, तो डॉक्टर उसे दवाई देते है और बताते है कि इस दवा को खाने से सर्दी ठीक होती और इस दवा को खाने से जुकाम ठीक होता है। और इस दवा को खाने से बुखार ठीक होता है। वह आदमी दवा लेकर आता है, लेकिन वह दवा को न खाकर, दवा हाथ में लेकर कहता है कि इस दवा को खाने पर सर्दी ठीक होती और इस दवा को खाने से जुकाम ठीक होता है और इस दवा को खाने से बुखार ठीक होता है। वह आदमी बार–बार इसी कथन को दोहराता रहता है। कुछ दिनों के बाद वह डॉक्टर के पास जाता है। और कहता है डॉक्टर साहब हमारी बीमारी तो ठीक नहीं हुई। तब डॉक्टर पूछते है कि क्या तुमने दवाई खाई थी तो आदमी कहता है कि नहीं तब डॉक्टर कहते है कि जब तक दवा नहीं खाओंगे तब तक बीमारी कैसे ठीक होगी। हमारी भी हालत कुछ इस प्रकार की है। हमें जो यह तारतम ज्ञान मिला है, हम उसे दिन रात कहते तो रहते है लेकिन ब्रह्मवाणी के कहे हुए कथनों पर आत्मसात नहीं करते हैं उसे हम रहनी में लाने का प्रयास नही करते है। जब तक हम धामधनी के कथनों को आत्मसात कर ध्यान चितवनी नहीं करेंगे तब तक हमारी आत्मा की जागृति असंभव है। धामधनी ने हमें इस तारतम वाणी के द्वारा सभी रास्तों को बताया है, कि हमें किस रास्ते पर चलना है, और हमारे सारे संशयों को दूर कर पूर्णत रूप से बेशक कर दिया है कि हम कौन है, हमारा निज स्वरूप क्या है, तथा हमारी आत्मा का अनादि प्रियतम कौन है, और हमारा निजघर कहां है, बस अब हमें दृढ़ता के साथ धामधनी के बताए हुए मार्ग को अपनाना है और चितवनी करते हुए हमें पल पल धनी के प्रेम में डूबते जाना है और तब वह दिन दूर नहीं रहेगा कि ''हक नजीक सेहरग से आड़ो पट न द्वार'' और तब हम यही बैठे–बैठे परमधाम के अखण्ड सुखों को अनुभव करेंगे। धाम धनी के अलावा अन्य कोई भी ऐसा इस संसार में नहीं है, जो हमें यही बैठे बैठे परमधाम के अखण्ड सुखों का अनुभव कराए इस समय धाम धनी हमें अपने इश्क का रस पिला रहे है, धाम धनी ने इस जागनी के ब्रह्माण्ड में अपने हृदय के सारे भेदों को हमारे सामने खोलकर रख दिया है। जो बाते हम परमधाम में रहकर के नहीं जानते थे, वो सभी बातें की पहचान धामधनी ने हमें इस जागनी के ब्रह्माण्ड में करा रहे है अगर हम अपनी आत्मा को जागृत करके इन सभी सुखों का आनंद नहीं ले रहे है, तो हमारा एक एक पल यहां पर व्यर्थ जा रहा है।

हमारा मन अभी भी इस संसार में ही कहीं न कहीं फंसा हुआ, हम अभी भी इतना जानने के बाद संसार की चीजों की संसार के लोगो को ही महत्व दे रहे है। बाद में अगर समय मिलता है, तो हम थोड़ी देर धामधनी को याद कर लेते है। हम अपनी बुद्धि से सिर्फ जानते है। कि ये संसार नश्वर है। यहां पर जो कोई भी दिखाई दे रहा है, वो अपना नहीं है, हर कोई एक दिन साथ छोड़ देगा लेकिन जिस दिन हमारे दिल में यह बात बैठ गई कि इस संसार में यदि अपना कोई है तो वो है, सिर्फ अक्षरातीत धामधनी श्री राज जी। फिर उनके बिना एक पल भी हमें इस संसार में अच्छा नहीं लगेगा। हमें यह संसार अग्नि के समान कश्टकारी लगने लगेगा। धामधनी ने कहा है–

अब हम रहयो न जावहीं मूल मिलावे बिन।
ह्रदय चढ़ चढ़ आवहीं संसार लगत अगिन।।

इसलिए अगर हमें अपनी आत्मा को जागृत करना है और निजधाम में अपनी सुरता को ले जाना है, तो सबसे पहले हमें ध्यान चितवनी का मार्ग अपनाना होगा और निजधाम में अपनी सुरता को ले जाना है तो सबसे पहले ध्यान चितवनी का मार्ग अपनाना होगा और उससे भी महत्वपूर्ण है निरंतरतौ। प्रायः क्या होता है। जब हम चिवतनी करना शुरू कर देते है, तो कुछ दिनों के बाद हमारा धैर्य टूटने लगता है और निरंतरता नहीं बन पाती है। हम कभी कभी बीच बीच में चितवनीं करना छोड़ देते है। लेकिन हमें अपना धैर्य नहीं खोना है। हमें अपना सब कुछ धाम धनी पर छोड़ देना है जब हम धैर्य रखकर अटुट श्रद्धा विश्वास और समर्पण के साथ चितवनी में लग जांएगे तो निश्चित रूप से हमें एक न एक दिन सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी।

आवश्यक सूचना

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा का **चौदहवां वार्षिकोत्सव,**
01 से 07 सितम्बर 2020 को मनाया जायेगा।

कालमाया का ब्रह्मांड और प्रलय

शशि किरन

पिछले अंक (खोजत–खोजत सतगुरु पाईये) में आपने जाना कि सतगुरु के सानिध्य से ही ईश्वर को पाया जा सकता है तथा ईश्वर क्षर से परे अक्षर,से भी परे अखंड परमधाम में रहता है तथा उसके स्वरूप को परब्रह्म अक्षरातीत कहते हैं ।

प्रिय पाठकों, प्राचीन समय में तो सभी लोग अपने अपने धर्मानुसार धर्मग्रंथो का अध्ययन करते रहते थे किंतु आज के समय में किसी को भी ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान नहीं है, यह स्थिति बहुत ही भयावह है तथा कलह का कारण बनी हुई है ! अतः मैं आप सभी को वास्तविक ज्ञान का परिचय कराना चाहती हूँ !

अब सबसे पहले क्षर ब्रह्माण्ड का अवलोकन करते हैं , क्षर ब्रह्माण्ड को क्षर पुरुष का देह , विराट पुरुष की देह या कुरान के हिसाब से 'ला मकान' ।

मैं आप सभी से एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ कि, 'क्षर ब्रह्माण्ड में श्लोक' कितने होते हैं तथा इसका विस्तार कहाँ तक है?

मुझे इस प्रश्न के उत्तर के रूप में हमेशा अलग अलग जवाब मिले जबकि इसका उत्तर तो एक ही होना चाहिए ! आइए तो जानते हैं इसका उत्तर :

यह ब्रह्मांड जिसमें हम और आप रहते हैं मृत्यु लोक कहलाता है, इसके नीचे 7 लोक या स्थान हैं :

1. पहले स्थान पर है 'अतल लोक' इसमें बाणासुर दानव राज्य करता है ।
2. दूसरा लोक है 'वितल लोक' इसमें हाटकेश्वर महादेव का निवास है ।
3. इसके बाद तीसरा लोक है 'सुतल लोक' जिसमे राजा बलि का राज है ।
4. इसके नीचे चौथा लोक है 'तलातल लोक' है इसमें मायावी दानवों का लोक है ।
5. इसके बाद पाँचवा लोक है 'रसातल लोक' यह नाग लोक है इसमें तक्षक जैसे बड़े बड़े नाग रहते हैं ।

6. इसके बाद छठा लोक है महातल लोक है, इसमें कवच इत्यादि राक्षस का राज्य है।

7. सातवाँ एवम अंतिम लोक है 'पाताल लोक' इसकी तली में सहस्र फनों वाला सर्प या शेषनाग पर भगवान आदि नारायण देवी लक्ष्मी के साथ निवास करते हैं ! इसे शास्त्रों में 'गर्भोदक–समुद्र' भी कहते हैं ।

इसके नीचे चौरासी नरक के कुंड हैं जहाँ जीव को उसके पापों की सजा दी जाती है ।

अब भूलोक के ऊपर 6 लोको का संक्षिप्त वर्णन देखते हैं ।

भूलोक के ऊपर का पहला लोक है भुवर्लोक। यहाँ 'पितृ गण', 'भूत', 'पिशाच', 'यक्ष' आदि निवास करते हैं। इसे 'अंतरिक्ष लोक' या 'द्युलोक' कहते हैं।

भूलोक के ऊपर दूसरा लोक है 'स्वर्गलोक'। यहां देवी देवता एवम सभी देवताओं के राजा इंद्र निवास करते हैं ।

भूलोक के ऊपर तीसरा लोक है महर्लोक , यह यमराज की नगरी यमराज और धर्मराज एक ही हैं, वे यहाँ अपने सेवको सहित निवास करते हैं। यहीं पर जीवों के कर्मों के हिसाब से न्याय होता है ।

भूलोक से ऊपर चौथा लोक है 'जनलोक', यहाँ ब्रह्मा जी के 4 मानसी पुत्र सनक, सनन्दन, सनातन, व सनत कुमार निवास करते हैं ।

भूलोक से ऊपर पांचवा लोक है 'तपलोक' यह तपस्वी, मुनियों का लोक है। यहाँ तपस्वी लोग निवास करते हैं ।

भूलोक से ऊपर छठा लोक है 'सत्यलोक', इसे ही वैकुंठ कहते हैं। यहाँ ब्रह्मा विष्णु एवं महेश रहते हैं ।

उपरोक्त वर्णित चौदह लोकों का वर्णन श्रीमद्भागवत, श्री महेश्वर तंत्र, कुरान (कुरान में चौदह तबक) , कबीर की वाणी आदि अन्य ग्रन्थों में भी किया गया है ।

इन चौदह लोकों के ऊपर हैं – अष्टावरण – 'प्याज की परतों के समान' एक के ऊपर दूसरी परत आठ आवरणों में आई हुई है। ये परते हैं – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि, एवं अहंकार।

ऊँकार ज्योति स्वरूप का स्थान : यह अष्टावरण के ऊपर है, त्रिगुण यही प्रकट होते हैं सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ।

गायत्री शक्ति का स्थान ' ज्योति स्वरूप से ऊपर गायत्री देवी का स्थान है। ये ही चारों वेदों की माता हैं ।

मोहतत्व : यह गायत्री देवी से ऊपर है। यहाँ तीन देवियाँ हैं 'विद्या', 'ब्रह्मविद्या' और 'सुमंगला शक्ति', हर देवी के पास चौबीस–चौबीस हज़ार शक्तियाँ हैं ।

सात शून्य : मोहतत्व के ऊपर सात शून्य हैं, ये सात शून्य ही निराकार कहलाते हैं।

उपरोक्त वर्णित चौदह लोक से लेकर सात शून्य तक महा प्रलय में लय हो जाता है । इससे ऊपर अक्षर ब्रह्म और उससे भी ऊपर परब्रह का स्थान है जो कभी लय नहीं होते।

महा प्रलय के अलावा प्रलय के तीन और प्रकार होते हैं वे हैं –

नित्य प्रलय : इस प्रलय का स्थान है मृत्यु लोक या पृथ्वीलोक यहाँ प्रतिदिन किसी न किसी की मृत्यु होती रहती है । इसे ही नित्य प्रलय कहते हैं ।

नैमित्तिक प्रलय : संसार के अंदर भूकम्प, बाढ़, किसी दूसरे देश से लड़ाई या अन्य किसी आपदा से जो सामूहिक रूप से हज़ारों लाखों की संख्या में जीव मृत्यु को प्राप्त करते हैं, इसे ही नैमित्तिक प्रलय कहते हैं ।

प्रातिक प्रलय : जब पाताल से लेकर स्वर्गलोक तक दस लोक लय हो जाते हैं तो इसे प्राकतिक प्रलय कहते हैं।

प्रिय पाठकों, जो समय चल रहा है सीधा सीधा इशारा देता है कि हम ईश्वर की ओर उन्मुख हों ! सांसारिक कर्मों के अलावा केवल और केवल अपने जीव की मुक्ति के बारे में सोचें, जिसे आज तक अर्जुन के अलावा किसी और जीव ने सोचा ही नहीं कि 'महा प्रलय के बाद हमारे इस जीव का क्या होगा'?

क्या आप सोचते हैं ?

–क्रमशः

"जिसके अन्दर बाल्यावस्था में ही अथवा युवावस्था के आरम्भ में ही आध्यात्म में अर्थात् ईश्वरभक्ति, योगाभ्यास और धर्मिक साहित्य जैसैं-ब्रह्मवाणी, वेद आदि ग्रन्थों को पढ़ने में तथा सत्संग के अनुष्ठान में रुचि या प्रेम उत्पन्न हो जाता है वह निश्चित् रूप से संस्कारवान, सौभाग्यवान एवं महान आत्मा है।"

धर्म और अध्यात्म

डाली गिरधर, दिल्ली

धर्म क्या है?

धार्यते इति धर्मः अर्थात जिसे धारण किया जाये, वह धर्म है, यहां धारण करने से अभिप्राय है जीवन में जो कुछ कर्म किए जाते हैं, वे उत्तम हों। वे कर्म है – मंदिर जाना, व्रत रखना, पूजा–पाठ आदि करना। सभी धर्म ग्रंथों में धर्म के मुख्य रूप से दस लक्षण बताए गए हैं जैसा कि इस श्लोक में स्पष्ट होता है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

अर्थात धैर्य, क्षमा, पवित्रता (बाहरी एवं अन्दर), चोरी न करना, इन्द्रिय संयम, आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना,ज्ञान,बुधि,सत्य का पालन और क्रोध न करना आदि।

धर्म से जुड़े कर्म करना तो फिर भी कदाचित सम्भव है किन्तु धर्म के सभी लक्षणों को स्वयं में धारण करना कठिन है।

जब धर्म पालन और धार्मिक, शुद्ध धार्मिक बनना इतना कठिन है, फिर अध्यात्म को जानना और आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलना तो और भी दुष्कर है। दुष्कर है, पर असंभव नहीं है। आइये अब थोड़ा विचार अध्यात्म पर करते हैं।

अध्यात्म क्या है?

अध्यात्म का संबंध आत्मा से है, अर्थात जब हमारे मन में स्वयं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो इसका मतलब हम अध्यात्म की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यानी जब मन में प्रश्न उठने लगें कि–

मैं कौन हूं? कहां से आया हूं?

इस संसार में आने का मेरा कारण क्या है?
इस संसार में आने से पहले क्या था?
मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? इत्यादि

जब बार–बार ऐसे प्रश्न उठने लगे तो समझना चाहिए कि हम अध्यात्म की ओर बढ़ना चाहते हैं। स्वयं को जानना ही अध्यात्म का लक्ष्य

है। क्योंकि स्वयं को जाने बिना परब्रह्म परमात्मा को नहीं जाना जा सकता। श्री प्राणनाथ जी की वाणी में कहा है–

पहले आप पेहचानो रे साधो,
पहले आप पेहचानो।
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को,
कौन कहे मैं जानो।।

इस प्रकार धर्म और अध्यात्म का अति संक्षिप्त परिचय आप के सामने प्रस्तुत किया है। अब हम स्वयं विचार करें कि हमारी स्थिति क्या है? हम कितना धर्म को जानते हैं और कितना पालन करते हैं एवं हमारे अंदर आध्यात्म से जुड़े मूल प्रश्न कभी आये या नहीं? केवल धार्मिक कर्म करने से न तो परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं और ना ही स्वयं को जान सकते हैं इसके लिए अध्यात्म से जुड़ना ही पड़ेगा। तभी हमारे सभी प्रश्नों का समाधान हो सकता है और तभी हम जाग्रत हो कर संसार को जान सकते हैं और अपने को जान सकते हैं और परमात्मा को प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। क्योंकि यदि इस मनुष्य जीवन को (जो कि 84 लाख योनियों के बाद मिलता है) पाकर भी अपने को न जाने, परमात्मा को न पहचाने तो यह अमूल्य जीवन सिर्फ उद्देश्य रहित कर्मकाण्ड में बीत जायेगा। इसलिए आइए हम सब जागरूक बने और अपने अंदर विद्यमान जीव, मन, आत्मा और परमात्मा की पहचान कर के अपने अमूल्य जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें।

पुरुषार्थ को इसलिए मानो कि ताकि हम केवल भाग्य के भरोसे बैठकर अकर्मण्य बनकर जीवन प्रगति का अवसर न खो बैठें और भाग्य को इसलिए मानो ताकि पुरुषार्थ करने के बावजूद भी मनोवांछित फल की प्राप्ति न होने पर भी हम उद्विग्नता से ऊपर उठकर संतोष में जी सकें।

* * *

जो लोग केवल पुरुषार्थ पर विश्वास रखते हैं प्रायः उनमें परिणाम के प्रति असंतोष सा बना रहता है और जो लोग केवल भाग्य पर विश्वास रखते हैं उनके अकर्मण्य होने की सम्भावना भी बनी रहती है।

* * *

अतः केवल एक को आधार बनाकर जिया गया जीवन अपनी वास्तविकता और सहजता खो बैठता है। सत्य तो यही है कि पुरुषार्थ ही भाग्य का निर्माण करता है और भाग्य पुरुषार्थ के अवसरों को जन्म देता है।

हाँसी और हम

राहुल श्रीमाली

अर्स की सभी निधियां अर्स के समान ही है, ब्रह्मवाणी में सभी रहस्यों का निरूपण किया ही गया है फिर भी अनचाहे डर का माहौल इन विषयों को लेकर बनाया जाता है या कहे तो बन जाता है। जैसे मेहेर की बात है, कहा जाता है ये करो जरूर मेहेर होगी... जब कह दिया कि 'दिल मोमिन मेहेर सागर' फिर किसी से मेहेर होगी यह आश्वासन लेना यह तो हाँसी है... हाँसी की ही बात करते है कुछ दृश्य से ...

1. एक लड़का अपने दोस्तों के पास जाते वक्त रास्ते मे कीचड़ में गिर गया, जब वह अपने दोस्तों के पास पहुंचा तो वे सभी दोस्त उससे 'अरे! यह कैसे हुआ...' पूछते हुए उस पर हंसने लगे , तो वह भी हंसते हुए कहता है जाने दो न कीचड़ में फिसल गया.. और सब हंसने लगते है..

2. एक स्त्री घर से कुछ सामान लाने बाजार गई और रास्ते मे कीचड़ में फिसल गई, वह कपड़े संभालती हुई घर आई, उसे इस हालत में देख उसका पति अपनी हंसी रोक न सका ,उससे हंसते हुए पूछता है 'अरे! यह क्या हो गया, कहां फिसल गई' वह भी कुछ झल्लाती हुई हंसते हुए जवाब देती है दिख नहीं रहा आपको कीचड़ में फिसल गई हूं...

3. एक व्यक्ति बाजार में जा रहा था, और वह कीचड़ में फिसल गया, वह अपने आपको हंसते हुए कोसने लगा कि 'साला ध्यान नहीं रहा, फिसल गया मैं..'

उपरोक्त तीनो ही दृश्य इस माया के है, तीनो में ही हाँसी का अद्‌भुत दृश्य है.. पहले में दोस्त है, दूसरे में पति पत्नी है, और तीसरे में व्यक्ति खुद है.... इन सभी उदाहरणों में दर्शाई हाँसी में कहीं भी शर्मजनक अवस्था नहीं है... पहली बात की किसी को शर्मजनक न लगे ऐसी इस स्तर की हाँसी हुई किस कारण?.... मात्र और मात्र प्रेम के कारण... दोस्त अपने दोस्त पर हंसे, पति अपनी पत्नी पर हंसा, व्यक्ति अपने खुद पर हंसा.... पर कहीं भी वैरमनस्य भाव नहीं था, और ना ही लज्जित करने का ठिठोली भाव था....

अब जरा सोचिए कि इस माया के ब्रह्मांड में भी शर्म, लज्जा, और ठिठोली के भाव के बगैर उससे ऊपर उठकर हाँसी हो सकती है तो अर्स की उस हाँसी का स्तर क्या होगा जो स्वयं अर्स के सागर श्री राजजी और उनकी लहरे रूहों के संग होगी.... अर्स में हाँसी अर्स के गुणों वाली इश्क़मयी होगी... धनी का हम रूहों से सम्बंध है इसलिए वे हाँसी की लीला हमारे साथ ही कर रहे है... यह भी है कि जैसे वह कीचड़ में पड़ने वाले हाँसी का आनंद लेने के बाद भी अपने आप अब कीचड़ में फिसलने नहीं जाएंगे वैसे ही हम रूहों को अर्स में होने वाली हाँसी का मनोहर स्तर जानते हुए भी माया के कीचड़ में फंसने ले लिए नहीं जाना है....

इश्क़ पर हाँसी नहीं होती, इश्क़ में हाँसी होती है और यह हाँसी की लीला तो अर्स से चली आ रही है वाणी कहती है–

ईनो बहुत लाड किया मुझसो,
मैं एक किया इनोसो।
सो एक मेरे लाड में,
बह गइयाँ तिनमो।।

और फिर जब कहां है कि 'हम पर अर्स में हंसने, माया दिखाई तीन बखत' तो हाँसी तो व्रज में भी हुई, रास में भी हुई और अब इस जागनी में हो रही है... और होती रहेगी सब पर हुई... हम बस इतना कर सकते है कि खुद माया के कीचड़ में फिसलने न जाए, जरा ध्यान से चले जैसे बीतक में सब चले है... अनजाने में फिसलन से हाँसी तो है ही, फिसले तो है ही हम तो हाँसी का आनंद तो है ही,पर अगर ध्यान से चले और न फिसले तो हमारी उस चाल पर धनी की नूरी नजर के सुख का भी आनंद है... सो इश्क़ में चलते रह!

सामान्यतया आदमी दान का मतलब किसी को धन देने से लगा लेता है। धन के अभाव में भी आप दान कर सकते हैं। तन और मन से किया गया दान भी उससे कम श्रेष्ठ नहीं।

* * *

किसी भूखे को भोजन, किसी प्यासे को पानी, गिरते हुए को संभाल लेना, किसी रोते बच्चे को गोद में उठा लेना, किसी अनपढ़ को इस योग्य बना देना कि वह स्वयं हिसाब किताब कर सके और किसी वृद्ध का हाथ पकड़ उसके घर तक छोड़ देना यह भी किसी दान से कम नहीं है।

* * *

हम किसी को उत्साहित कर दें, आत्मनिर्भर बना दें या साहसी बना दें, यही भी दान है। अगर आप किसी को गिफ्ट का ना दे पायें तो मुस्कान का दान दें, आभार भी काफी है। किसी के भ्रम-भय का निवारण करना और उसके आत्म-उत्थान में सहयोग करना भी दान है।

कोरोना की दवाई आपके शरीर मे ही है

कोरोना वायरस की कोई दवा अभी नही बनी है। जो भी कोरोना से स्वस्थ हुए है वो सिर्फ अपनी इम्यूनिटी (शरीर की स्वयं रोगों से लड़ने की ताकत) से ही ठीक हुए है। बहुत लोगो की ऐसी धारणा है कि ये बीमारी एक बार तो सबको ही होनी है जिसकी इम्युनिटी अच्छी होगी वो बच जाएगा और जिसकी अच्छी नही होगी वो नही बचेगा। मतलब ये हुआ कि हमारे शरीर की इम्युनिटी ही कोरोना की दवाई है। तो हमे सारा ध्यान अपनी इम्युनिटी बढ़ाने पर देना चाहिए यदि आप इस महामारी को मात देना चाहते हो। तो हमे यह सीखने की बहुत आवश्यकता है कि किन चीजों से इम्युनिटी बढ़ती है और किन चीजों से इम्युनिटी घटती है।

पहले इम्युनिटी बढ़ाने वाली चीजो पर ध्यान देते है।

1. योगा
2. व्यायाम या कोई खेल
3. घर का बना शुद्ध भोजन
4. आंवला (किसी भी रूप मे खाए)
5. फल (खासकर खट्टे फल)
6. हरी सब्जियां
7. दालें
8. गुड़
9. शुद्ध तेल कोई भी (रिफाइंड बिल्कुल नही)
10. तुलसी व अन्य आयुर्वेदिक पेय पदार्थ।
11. दूध, दही, लस्सी, घी इत्यादि।

शरीर की इम्युनिटी घटाने वाली चीजें

1. मैदा (सबसे विनाशकारी पदार्थ, किसी भी रूप मे जैसे ब्रेड, नान, भटूरे, बर्गर, पिज़्ज़ा, जलेबी, समोसा, कचोरी, पाव (पाव भाजी वाला) इत्यादि बिल्कुल भी न खाए।
2. रिफाइंड आयल बिल्कुल न खाए।
3. चीनी बिल्कुल नही खाए। (गुड़, शकर, खांड़

खाए।)

4. बाहर का कोई भी जंक फूड न खाए।
5. मैदे ओर चीनी से बनी चीज बिल्कुल न खाए जैसे बर्गर, पिज़्ज़ा, जलेबी इत्यादी।
6. एल्युमीनियम के बर्तनों मैं खाना बनाना बन्द करे।
7. कोल्ड ड्रिंक बिल्कुल नही पीये।
8. पैकिंग वाली चीजें न खाए या कम से कम खाए।

इस तरह इन बातों को अपनाकर आप अपनी इम्युनिटी इतनी स्ट्रांग बना सकते हो कि कोरोना को मात दे सको।

ध्यान रहे आपकी इम्युनिटी ही कोरोना की दवाई है।

बात सही लगे तो आगे बढ़ाए।

आरोग्य जीवन **SPJIN** से अवश्य जुडे। धन्यवाद

https://www-facebook-com/groups/1991543000878803/

लेखकों के लिए आवश्यक सूचना

सुन्दरसाथ के चरणों में विनम्र प्रार्थना है कि जो भी सुन्दरसाथ लिखने में कुशल,योग्य है। जो अपना भाव तारतम वाणी और शास्त्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं ऐसे सुन्दरसाथ अपना लेख ईमेल (E-mail) या वटसप (watsapp) के माध्यम से ज्ञानपीठ में भेजें। लेख भेजने की अन्तिम तीथि प्रत्येक महिने की 1 तारिख तक रहेगी। समय पर भेजे गये लेखों को ही उस महिने की पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।अन्यथा आगे आनेवाली महिनों में प्रकाशित की जायेगी।

लेख भेजने का नियम–

1– शुद्ध टाईप होनी चाहिए।
2– हस्तलिखित शुद्ध एवं स्पष्ट होना चाहिए।
3– टाईप किया गया लेख हो तो ओरजिनल कांपी होनी चाहिए।
4– डाक से ज्ञानपीठ के पते भर भेज सकते हैं।
5– हस्तलिखित लेख को PDF बनाकर ही भेजें, ताकि पढने में और टाईपिंग में असुविधा न हो।

तारतम मंजरी मासिक पत्रिका "लेख" प्रेषित हेतु एवं अन्य कोई भी असुविधा के लियें निम्नलिखित EMAIL और दूरभाष नम्बरों पर सम्पर्क करें।

tartammanjari@gmail.com

+9193141 93262 (जुनेजा बाबूजी)
+919725389547 (आचार्य सुभाष जी)

सदस्यता फार्म

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित **''तारतम मंजरी''** हिन्दी मासिक पत्रिका के सदस्य बनें।

कार्यालय– श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, नकुड़ रोड़, सरसावा

जिला– सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत 247232

मोबाईल न.– 7088120381 (कार्यालय) 8650851010,9725389547,9314193262

email- tartammanjari@gmail.com shri, prannathgyanpeeth@gmail.com

महोदय,

मैं ''तारतम मंजरी'' का वार्षिक/आजीवन शुल्क रु. ..... नकद/ मनी ऑडर/ बैंक ड्राफ्ट/ पे – इन – स्लिप ..... दिनांक .....

अंतर्गत अदा कर रहा हूँ।

अतः मुझे हर माह तारतम मंजरी निम्न पते पर भेजें।

नाम ..... पिता/पति का नाम .....

पता .....

..... राज्य ..... पिनकोड़ .....

फोन ..... व्हाट्सएप न. ..... e-mail .....

(विशेष नियम)

(1) सदस्यता शुल्कः वार्शिक 130/–, आजीवन 1200/–

(2) ड्रफ्ट ''तारतम मंजरी'' के नाम सरसावा, सहारनपुर में देय होना चाहिये।

(3) कृपया अपना नाम व पूरा पता स्पश्ट रूप से भरें।

(4) सदस्यता शुल्क ''साहित्य खाता'' (श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, ट्रस्ट) के खाता संख्या 1335000100118751@IFS CODE- PUNB0133500 (पंजाब नेशनल बैंक, सलेम्पुर(सहारनपुर)उ.प्र. में जमा करा सकते हैं।

सम्पादक

संवेदना – सेवाभाव एवं समर्पण

बबली माता जी (नलिनी ढींगरा जी)

तारतम वाणी के द्वारा हमें यह ज्ञान हो चुका है कि अपने आप को धनी के चरणों मे न्योछावर/समर्पित किये बिना हम उनके प्रेम के अधिकारी नहीं बन सकते हैं । और श्री राजजी की पहचान, सेवा व नियमित चितवनि किये बिना हम कभी भी श्री राजजी के चरणों मे पूर्ण समर्पित नहीं हो सकते हैं । जहां एक ओर सेवा और ज्ञान से जीवभाव समाप्त होता है तो वहीं दूसरी ओर चितवनि से आत्मिक भाव जागृत होता है ।

ऐसे ही, हमारी सुन्दरसाथ बबली माता जी (नलिनी ढींगरा जी) जिन्होंने अपने प्रियतम को लक्ष्य में रखकर सेवा, ज्ञान व चितवनि को जीवन का अनिवार्य अंग बनाकर अपने प्रियतम को रिझाया व संसार मे धन्य हुईं । अपनी प्रेममयी सेवा से अपने सद्गुरु को रिझाकर अपना जीवन सार्थक किया । सेवा के इसी क्रम में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को कई वर्षों तक आध्यात्मिक ज्ञान दिया व चर्चनी के विशेष ज्ञान से समाज में अपनी सेवा की छाप छोड़ी ।

आतम भले ही धनी का अंग होने से अमर है परंतु शरीर तो नश्वर है । और आज नहीं तो कल यह अपने कारण में विलीन हो ही जाता है । आज दिनांक 04/05/2020 को प्रातः 6 बजे माता जी ने अपने इस पंचभौतिक तन को छोड़ गुम्मट जी मे विराजमान धनी के चरणों मे स्थान प्राप्त किया ।

सम्पूर्ण ज्ञानपीठ परिवार श्री धाम धनी के चरणों मे प्रार्थना करता है कि माता जी को अपने चरणों में स्थान दें व उनके परिवारजन को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें ।

विनम्र निवेदन

धाम धनी के लाडले सुन्दरसाथ जी! वर्तमान समय में श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा में शिक्षण, साहित्यिक एवं निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जिन सुन्दरसाथ ने इन कार्यों के लिए अपनी सेवाएं लिखवायी है या स्वतः उनके मन में सेवा करने की इच्छा है, कृपया वे इन खातों में धनराशि भेजने का कष्ट करें। इस बात का ध्यान रखा जाय कि जिस सेवा की धनराशि भेजी जा रही है, मात्र उसी खाते की C.B.S. A/C संख्या में भेजें।

प्रणाम जी

1. खाताधारक का नाम – श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट खाता संख्या – 3290805513 2. खाताधारक का नाम – श्री ज्ञानपीठ प्रकाशन खाता संख्या – 3290804553	**सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया,** पता : शाखा–सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र. – 247232 MICR Code - 241016005, IFSC Code CBIN0282158
3. खाताधारक का नाम – श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र, पन्ना खाता संख्या – 3759122888,	**सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया,** पता : शाखा – पन्ना IFSC Code CBIN0282158

सामान्य खाता संख्या
1335000100111916
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

साहित्य खाता संख्या
1335000100118751
पंजाब नेशनल बैंक
सलेमपुर (सहारनपुर) उ.प्र.
RTGS/NEFT IFS
CODE - PUNB0133500

भवन निमार्ण खाता संख्या
34971188767
भारतीय स्टैट बैंक
(11439) सरसावा, सहारनपुर
उत्तरप्रदेश, पिन- 247232
IFS CODE- SBIN0011439

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा से प्रकाशित साहित्यों की सूची

क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य	क्र. स.	ग्रन्थ का नाम	मूल्य
1.	श्री कुलजम स्वरूप (मूल)	700.00	36.	बोध मंजरी (नेपाली)	15.00
2.	श्री बीतक साहेब टीका	400.00	37.	बोध मंजरी (उड़िया)	15.00
3.	श्री रास टीका	150.00	38.	शाश्वत सत्य की ओर	15.00
4.	श्री प्रकाश टीका	300.00	39.	सत्य को बाटो (नेपाली)	15.00
5.	श्री कलश टीका	225.00	40.	संसार से परमधाम की ओर	20.00
6.	श्री खटरूती टीका	80.00	41.	श्री प्राणनाथ महिमा	20.00
7.	श्री किरन्तन टीका (हिन्दी)	300.00	42.	श्री ब्रह्मवाणी चर्चा	65.00
8.	श्री किरन्तन टीका (अंग्रेजी)	350.00	43.	निजानन्द संस्कार पद्धति	15.00
9.	श्री किरन्तन टीका (नेपाली)	300.00	44.	सेवा पूजा	30.00
10.	श्री खुलासा टीका	250.00	45.	मूल स्वरूप की ओर	80.00
11.	श्री सनंध टीका (अप्रकाशित)		46.	चितवनी	5.00
12.	श्री खिलवत टीका	180.00	47.	आर्ष ज्योति	120.00
13.	श्री परिक्रमा टीका	275.00	48.	तारतम के निर्झर	70.00
14.	श्री सागर टीका	170.00	49.	तारतम पीयूषम्	70.00
15.	श्री सिनगार टीका	300.00	50.	हमारी शाश्वत सम्पदा	60.00
16.	श्री सिन्धी टीका	150.00	51.	खाद्य परिशीलन	250.00
17.	श्री मारफत सागर टीका (अप्रकाशित)		52.	विनाश का प्रर्याय मांसाहार	60.00
18.	श्री क्यामत नामा टीका (अप्रकाशित)		53.	विराट नक्शा (केलेण्डर रूप में)	50.00
19.	श्री मुखवाणी संगीत	150.00	54.	सौवं क्यामतनामा	90.00
20.	विद्वददमनी	200.00	55.	अनमोल मोती	5.00
21.	पट दर्शन	200.00	56.	सागर के मोती	10.00
22.	धाम सुषमा	60.00	57.	नित्य पाठ	5.00
23.	जागो और जगाओ	100.00	58.	ये स्वर्णिम पल	10.00
24.	दोपहर का सूरज	60.00	59.	मुख्तार हिन्द	20.00
25.	प्रेम का चाँद	65.00	60.	शब–ए–मेयराज	15.00
26.	निजानन्द योग	60.00	61.	अफलातूनी इलम	20.00
27.	हमारी रहनी	50.00	62.	बुलन्द मुकदमा	40.00
28.	ब्रह्माण्ड रहस्य	40.00	63.	झूठ ही झूठ	60.00
29.	श्री मद्भागवत यथार्थम्	30.00	64.	यथार्थ दीपिका	30.00
30.	ध्यान की पुष्पांजली	70.00	65.	प्रश्नमाला	5.00
31.	कड़वे सच	50.00	66.	निजानन्द चित्रकथा	30.00
32.	तमस के पार (बड़ी)	40.00	67.	शेख जी मीर जी का बयान	20.00
33.	तमस के पार (छोटी)	20.00	68.	फरमान	30.00
34.	तमस के पार (पंजाबी)	40.00	69.	स्वास्थ्य के प्रहरी	30.00
35.	बोध मंजरी (हिन्दी)	15.00	70.	सत्यांजलि	40.00

सुभाषित वचन

यह पंचभौतिक तन लाखों जन्मों के पश्चात मिलता है तथा सदा रहने वाला नहीं है। अतः प्रियतम परब्रह्म को पाने का यह सुनहरा अवसर है जिसे हमें गंवाये बिना उसे पाने का प्रयास करना चाहिए।

* * *

ज्ञान के द्वारा ईमान दृढ़ होता है। बिना ईमान प्रेम नहीं आता और बिना प्रेम के प्रियतम परब्रह्म से मिलन नहीं होता।

BOOK POST

RNI:UPHIN/2016/46009
RNP/SHN/18-2019-21

प्रकाशक
पू.श्री राजन स्वामी जी

प्रकाशन कार्यालय
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, नकुड़ रोड, जिला–सहारनपुर (उ.प्र.)
पिन कोड–247232

सम्पादक
श्री एस. पी. आर्य
भूतपूर्व आई. ए. एस.

तारतम मंजरी पत्रिका के स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट, सरसावा
जिला–सहारनपुर, दूरभाष – 7088120381
अवतरित न होने पर कृपया इस पते पर लौटाये।
धन्यवाद

सेवा में,